

Name - Aftab

Class - ~~XII~~

Subject - Hindi

Subject code - 001

Enrollment - 270524233051

(Enter name - A-31 institutional Area Noida
Sector - 62 Noida, Distt.
Uttar Pradesh - 201309

TMA { 001 }

प्र. 01

निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 40-60 शब्दों में दीजिए।

- क) कबीर की गुरु महिमा पर दिव्यजी कीजिए तथा आज के संदर्भ में गुरु - शिष्य संबंध पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

कबीर की गुरु महिमा उनके विचारों और कविताओं में प्रशंसनीय है। उन्होंने गुरु की दिव्यता से सम्बोधित किया और उनके मार्गदर्शन का महत्व बताया है। आज के समय में भी गुरु-शिष्य संबंध मानवता के महत्वपूर्ण है। सही गुरु मिलना अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो ज्ञान, अनुशासन, और सही मार्ग प्रदान करके शिष्य का समृद्धि और सफलता में साक्ष्य बनाता है। गुरु-शिष्य संबंध सम्मान, श्रम, और शार्थकता से भरा होना चाहिए।

प्र. 02

निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 40-60 शब्दों में दीजिए।

- क) दो कहानियाँ, कहानी से मानव सेवा को महत्वपूर्ण क्यों बताया गया है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर: दो कहानियाँ कहानी से मानव सेवा को महत्वपूर्ण बताया गया है क्योंकि इससे समाज में वनप्रसन्नता, सहजशीलता, और सामाजिक संबंधों का सुवर्धन होता है। मानव सेवा से वास्तव में हम अपने अंदर के अंतरात्मिक और सामाजिक संबंधों को और सामाजिक पहलुओं को बेहतर बनाते हैं और समाज में सामंजस्यपूर्ण वातावरण पैदा होता है। सेवा

वनों से एक इंसानों के वंश और आवास को समझने
 है और समझने कि वंश का आवास कहां है जिससे
 आवास में समझने और आवास का आवास बढ़ता है।
 आवास में वंश केवल व्यक्ति के आवास के लिए बल्कि आवास
 के आवास के लिए भी महत्वपूर्ण है।

निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 40-
 60 शब्दों में दीजिए।

सतपुड़ा के वन जंगल कविता के आधार पर प्रश्नों की
 श्रृंखला का वर्णन कीजिए।

उत्तर • सतपुड़ा के जंगल में एक गहरी निश्चिन्ता अर्थात् शान्ति
 है। वन कुछ अलगाव - सा, अनजाना सा है, कहीं
 आकाश को छूने का जाल के पेश है, तो कहीं वे आड़े-
 निश्चिन्ता वन में भी फैल कर पंगुडंडियों के बिलकुल
 करीब आ रहा है।

• इस जंगल में अनेक नदी, नहर और नाले बहते हैं और
 पत्नी, फूल, कलियाँ और हरी घास इनकी श्रृंखला बढ़ती है।
 जंगलों की श्रृंखला, सुषमा हमारे प्रवेश करने की आकांक्षा भी
 लाता है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60-150 शब्दों में दीजिए
 प्रश्न - बुद्धिमान आंदोल में अनेक दार्शनिक प्रश्नों के उत्तर दिए
 गए हैं किन्हीं पाँच के उत्तर देने वाले में से किसी

प्रश्न 2) वन में वृक्ष कि जंगल का कारण क्या है जिसका उत्तर
 बुद्धिमान ने लासमाओ, कामराओ, और कर्मिल में दिया।
 यह सिद्ध करता है कि वृक्ष जंगल का जंगल उनके दिलों में
 के परिणाम के रूप में होता है।

यस ने पूरा कि संसार में कुछ का होता है, जिसका अर्थ पुनर्निर्माण के लक्षण, स्वयं, और इस के कारण के रूप में दिया। इससे इस के पूरा करने का संकेत मिलता है।

5) यस ने पूरा कि चित पर नियंत्रण कैसे संभव है, जिसका अर्थ पुनर्निर्माण के लक्षणों पर विजय के माध्यम से दिया यह दिया है कि संतों की साक्षि चित के नियंत्रण में महत्वपूर्ण है।

यस ने पूरा कि शब्दा हैम क्या है, जिसका अर्थ पुनर्निर्माण के लक्षणों के साथ स्वयं को देखने के रूप में दिया। यह बताता है कि शब्दा हैम अवधारणाओं और अवधारणाओं के बावजूद सभी में समाप्त होता है।

निम्नलिखित शब्दों को दो किसी एक शब्द का अर्थ लगभग 100-150 शब्दों में दीजिए।

(क) शब्द या मंच संयोजन के शब्दों द्वारा रखे योग्य बातों में से किन्हीं चार का वर्णन कीजिए।

ख) शब्द या मंच संयोजन के शब्दों द्वारा रखे योग्य बातों में से चार का वर्णन करते हैं।

विषय का सम्पूर्ण अर्थ: शब्द या मंच संयोजन के लिए विषय की जानकारी होना महत्वपूर्ण है। इससे हम विषय को गहराई से समझते हैं, त्वारान्वित जानकारी प्रदान करते हैं, और उसे साक्षात्कार से प्रस्तुत करते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि हम अपने वर्तमान को सही और सामाजिक जानकारी देते हैं और उन्हें आकर्षित करते हैं। विषय की आवश्यकता पर हमने प्रतिक्रिया दी है और हमें शब्द का नेतृत्व करने की अनुमति देता है।

2

अधा अधिकाधिक :- आप यह जानते हैं कि हर विषय की अपनी आत्मावाली और आधा संरचना होती है। हम संगीत कार्यक्रम के बीच संगीत के आधा जैसी आत्मावाली का उपयोग करेंगे, वही खेल-कूद, प्रतियोगिता के कार्यक्रम में नहीं कर सकेंगे। अतः यह जरूरी है कि हम विषय विशेष की आधा पर अधिकार रखते हैं। आधा पर अधिकार का मतलब यह है कि हम विषय के आधुरूप को और हम आधाकार के माध्यम से जो आधा प्रतीत करेंगे वही हमारे शिक्षण और परिस्थिति के अनुसार अपनी बात को कहने के तरीके को बहुत सारे प्रकारों में यह है कि एक ही बात को कई तरह से कहा जा सकता है और आप नहीं रहे जो एक कहना चाहते हैं।

3)

अधःपठनता : संगीत के समस्त विषय-वस्तु के आली को महत्वपूर्ण रूप से समझ करवा आवश्यक है। आदर्श के रूप में, यदि विषय संबन्धी है, तो हमें अपनी से आज और पीढ़ी का आवा दिखाने चाहिए, जल्द ही जल्दी के लिए कॉमलता का आभूषण करना चाहिए। आदर्श-अवशेष के साथ आली को समझ करवा भी महत्वपूर्ण है।

4)

अधःअंगिका : आधा पर बीच संगीत के समस्त आवा-अंगिका का महत्व है। हमें अपने आली को संगीत रखना चाहिए, ताकि हमारे व्यक्ति का सौता भी हमारे संदेश को सके, बाद में होने वाले मुद्दों को विचारशीलता से समझ करवा चाहिए जिससे कि हमारी प्रस्तुति प्रभावशाली हो। शाब्द ही; बीच पर छोड़े होने का तरीका पूरी महत्वपूर्ण है जिससे हम दूसरों के साथ जुड़ सके लेकिन आत्मिक आधुरण नहीं होना चाहिए। अधः संगीत की शब्द रूप से की गई अभिव्यक्ति आपके आली को सही तरीके से समझ करवा है और व्यक्ति को आपके संदेश के साथ जोड़ती है।

06. श्री की गई परिस्थितियों में श्री की गई शक्ति परीक्षा
नेपाल कीजिए।

(10) श्री में खेलकूद की वर्तमान स्थिति विषय पर शक्ति
कीजिए। श्री की शक्ति के माध्यम से प्रमुख
श्री की शक्ति परीक्षा कीजिए।

9. श्री में खेलकूद की वर्तमान स्थिति विषय पर शक्ति
कीजिए।

श्री में खेलकूद की वर्तमान स्थिति बहुत ही महत्वपूर्ण
है। खेलकूद न केवल आर्थिक विकास का माध्यम होता
है, बल्कि यह देश की शक्ति को बढ़ावा देता है और
युवाओं को स्वस्थ और सक्रिय जीवन शैली की ओर
प्रोत्साहित करता है। श्री में खेलकूद के कई उत्कृष्ट
प्रतिबंध और खिलाड़ी हैं जो अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता
में मेडल जीतने में सफल रहे हैं। क्रिकेट अब श्री
का राष्ट्रीय खेल हो गया है और उसके साथ ही
हॉकी, बैडमिंटन, टेनिस, बॉक्सिंग, फुटबॉल, और
उत्तम में कुछ ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी कसौटी
पार की है। इससे खेलकूद, हमारे खेलकूद के प्राथमिक
बालक शक्ति परीक्षा में बढ़ावा देते और खेलकूद
का महत्व देशवासियों के बीच और भी बढ़ेगा।